विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 23 : अंक 45 : नई दिल्ली : 2-8 फरवरी 2018

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण ओड़िशा में

उदयगिरि-खण्डगिरि में पावन पदार्पण

१६ जनवरी। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आज उदयगिरि-खण्डगिरि की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में अनेकानेक श्रद्धालुओं ने अपने-अपने घरों व व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के बाहर पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया।

कांग्रेस के ओड़िशा प्रदेश अध्यक्ष तथा साक्षी गोपाल क्षेत्र के विधायक श्री प्रसाद हरि चंदन ने मार्ग में पूज्यप्रवर के दर्शन किए। वे बोले--'भुवनेश्वर में आपका स्वागत-अभिनन्दन है। मैं आपकी अहिंसा यात्रा के साथ हूं।' वे उदयगिरि-खण्डगिरि तक पूज्यप्रवर के आसपास पैदल चले। उदयगिरि-खण्डगिरि के निकट ओड़िशा दिगम्बर जैन समाज के पदाधिकारियों आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

पूज्यप्रवर प्रवासस्थल के सामने से उदयगिरि और खण्डगिरि के अवलोकन हेतु पधारे। बताया गया कि दोनों पहाड़ियों पर बनी गुफाएं जैन इतिहास, वास्तुकला आदि की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। इन गुफाओं का निर्माण प्राचीन ओड़िशा अर्थात् कलिंगदेश के नरेश खारवेल ने करवाया था। खारवेल जैन धर्म के अनुयायी थे, ऐसा वर्णन भी प्राप्त होता है। ईसा पूर्व की प्रथम शताब्दी में खुदवाई गई इन गुफाओं को अभिलेखों में 'लेंण' कहा गया है। ये गुफाएं जैन साधुओं के प्रवास हेतु उपयोग में आती थीं। ये गुफाएं प्राचीनकाल में ओड़िशा में विद्यमान रहे जैन धर्म के प्रभाव को दर्शाती हैं। शिल्पकला की दृष्टि से भी ये अपना महत्त्व रखती हैं।

पूज्यप्रवर उदयगिरि पहाड़ी पर पधारे। उदयगिरि में १८ गुफाएं और खण्डगिरि में १५ गुफाएं निर्मित हैं। पूज्यप्रवर उदयगिरि प्रवेश द्वार से दाहिनी ओर कुछ आरोहण करते हुए 'रानी गुम्फा' (गुफा) के निकट पधारे। यह गुफा दुमंजिला हैं। इस गुफा में पंक्तिबद्ध कुटीरें-सी बनी हुई हैं। जिनका फर्श एक ओर से कुछ उठा हुआ था, जो संभवतः तकिये के रूप में प्रयुक्त होता था। गुफाओं के मुंह दरवाजों जैसे हैं, जहां से दिन में सूरज की रोशनी आ सकती है। इन गुफाओं के पथरीले फर्श गर्म रहते हैं। पूज्यप्रवर हाथी गुम्फा में पधारे। इसके प्रवेश द्वार पर ब्राह्मी लिपि में नमस्कार महामंत्र अंकित है। पूज्यप्रवर ने कुछ और गुफाओं का भी अवलोकन किया, जिनमें भित्ति स्तंभों आदि पर विभिन्न चित्रों को कलात्मक रूप में उकेरा गया है।

आचार्यप्रवर सामने स्थित खण्डगिरि के निकट पधारे, किन्तु मार्गस्थ काई के कारण पूज्यप्रवर पहाड़ी पर नहीं पधारे। दूसरे मार्ग सीढ़ियां कुछ ज्यादा ऊंचाई लिए हुए थी। पूज्यप्रवर उस मार्ग से सीढ़ियों के समीप पधारे और नीचे से ही खंडगिरि को निहारा। बताया गया कि खण्डगिरि के शिखर पर 'कलिंग जिन' की मूर्ति स्थापित है, जिसे भगवान ऋषभ की मूर्ति माना जाता है। किसी समय मगध नरेश बलपूर्वक इस मूर्ति को कलिंग से अपने देश ले गए थे, जिसे कलिंग नरेश खारवेल पुनः जीतकर ले आए। चूंकि उस समय का ओड़िशा जैन राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान रखता था। संभवतः इसलिए भगवान ऋषभ की मूर्ति को कलिंग जिन के नाम से जाना जाता है। खण्डगिरि पहाड़ी पर स्थित गुफाओं में कई तीर्थंकरों आदि के चित्र भी उत्कीर्ण हैं। पूज्यप्रवर खण्डगिरि से प्रस्थान कर दिगम्बर जैन मंदिर धर्मशाला में पधार गए। आज का प्रवास यहीं हुआ। आज विहार करीब ११.७ कि.मी. का रहा।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में त्रिदिवसीय वर्धमान महोत्सव के मध्य दिन के प्रसंग में चारित्र में वर्धमान रहने की प्रेरणा प्रदान की।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'उदयगिरि-खण्डगिरि एक ऐतिहासिक स्थल के रूप में है। यह जैन शासन से भी संपृक्त है, ऐसा प्रतीत हो रहा है। किसी घटना प्रसंग से जुड़ जाने से स्थान का महत्त्व हो जाता है। लंबे काल के बाद तो वह घटना प्रसंग भी विस्मृति में जा सकता है। कुछ वर्षों तक उसका महत्त्व रह सकता है या जब तक वह प्रसंग सामने आता रहे, तब तक उसका महत्त्व रह सकता है। पता नहीं, किन-किन स्थानों से साधु सिद्धत्व को प्राप्त हुए हैं, पर निकट अतीत में जहां से मुनि लोग सिद्धत्व को प्राप्त हुए हों, उस क्षेत्र का वर्तमान में विशेष महत्त्व हो जाता है। हम अपने जीवन में चारित्र का विकास करे, तब सिद्धि प्राप्ति हो सकेगी।'

दिगम्बर जैन संप्रदाय के एलक १०५ श्री गोसलसागरजी ने अपने अभिभाषण में खण्डगिरि व उदयगिरि के ऐतिहासिक महत्त्व को प्रस्तुत किया।

श्री दिगम्बर जैन समाज की ओर से श्री रमेशचंद्र रांका ने अपने वक्तव्य में कहा--'आज हमारे बड़े सौभाग्य का उदय हुआ है कि जिन शासन के अध्यात्मवेत्ता परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज का इस सिद्धक्षेत्र में शुभागमन हुआ है। आपके आगमन तथा जिनागम तत्त्वों की लहरों द्वारा सिंचित आपकी देशना से हम सभी लाभान्वित हुए। हम सभी का हृदय अत्यंत उल्लसित है। मैं महान चरित्र चक्रवर्ती आचार्य महाश्रमणजी के चरणों में भुवनेश्वर दिगम्बर जैन समाज की ओर से वंदन करता हूं।'

वर्धमान महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश बेताला ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। दिगम्बर जैन समाज की महिलाओं ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम के पश्चात् राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के ओड़िशा पूर्वी प्रांत के संघचालक श्री समीर महंती ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

क्षांति-मुक्ति में आगे बढ़ें

१७ जनवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः उदयगिरि-खण्डगिरि से पुनः भुवनेश्वर की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में कुछ श्रद्धालुओं ने अपने व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। सिंघी परिवार की प्रार्थना पर पूज्यप्रवर सिंघी चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा संचालित सिंघी एवं सिंघी म्युजियम में पधारे। पूज्यप्रवर ने यहां संगृहीत पुस्तकों, सिक्कों, डाक टिकटों आदि का अवलोकन किया। करीब १०.२ कि. मी. का विहार परिसम्पन्न कर आचार्यप्रवर भुवनेश्वर के तेरापंथ भवन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

वर्धमान महोत्सव का तीसरा दिन। मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में मुख्यमुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'संघ निरंतर प्रवर्धमान रहे, इसके लिए उसके हर सदस्य को प्रयत्नशील रहना चाहिए। अहंकार, क्रोध, प्रमाद, राग व आलस्य--ये पांच तत्त्व विकास में बाधक हैं। अहंकारी व्यक्ति विकास से वंचित रह जाता है। विनय के क्षेत्र में आचार्यप्रवर आदर्श हैं। शासनकाल की वर्धमानता के साथ आचार्यप्रवर का विनय भी मानों प्रवर्धमान होता जा रहा है। क्रोध प्रायः सर्वत्र नुकसानदेह ही बनता है। आचार्यप्रवर की उपशांति हम सबके लिए प्रेरणास्पद है। प्रमाद विकास का बड़ा शत्रु है। अपने दायित्व और मर्यादाओं के प्रति जागरूकता आदमी को वर्धमान बनाती है। आचार्यप्रवर की अप्रमतता हमें सतत जागरूक रहने की प्रेरणा देती है। रोग भी वर्धमानता का बाधक है। संयम और संकल्प के द्वारा आदमी स्वस्थ रह सकता है। आलस्य भी विकास का शत्रु है। पुरुषार्थ के बिना मंजिल कैसे प्राप्त होगी। आचार्यप्रवर के पुरुषार्थ की लौ निरंतर प्रज्वलित है। इस लौ से हमारे भीतर पौरुष की ज्योति जले। विनय, उपशांति, अप्रमाद, स्वस्थता और पुरुषार्थ को आत्मसात् कर हम सभी परम मंजिल की ओर वर्धमान रहें।'

कार्यक्रम में ११.११ बजे से परम पूज्य आचार्यप्रवर ने भुवनेश्वरवासियों को सम्यक्त्व दीक्षा स्वीकार करवाई।

सन्मति शिक्षण कक्षा के छात्र मुनियों द्वारा 'वर्धमान महोत्सव आज भुवनेश्वर में' गीत का संगान किया गया। उल्लेखनीय है कि लंबे अर्से से पूज्यप्रवर प्रायः प्रतिदिन रात्रि में एक कक्षा के माध्यम से बालमुनियों को प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। पूज्यप्रवर ने उस कक्षा का नाम सन्मति शिक्षण कक्षा रखा है।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'ओड़िशा की राजधानी भुवनेश्वर में आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में वर्धमान महोत्सव का कार्यक्रम हो रहा है। वर्धमान होने का अर्थ है व्यक्ति आज जिस स्थिति में है, उससे कुछ विशिष्ट बनना। विशिष्ट बनने के लिए कुछ विशिष्ट करना होता है। विशिष्ट करने के लिए विशिष्ट को सामने रखना चाहिए। तेरापंथ धर्मसंघ के संदर्भ में आचार्य भिक्षु को विशिष्ट महापुरुष के रूप में सम्मुख रखा जा सकता है। वे आत्मार्थी और परमार्थी पुरुष थे। उन्होंने जैन शास्त्रों के अवगाहन के द्वारा मन का द्वंद मिटाया और जहां पगडंडी भी नहीं थी, वहां तेरापंथ के रूप में राजपथ बना दिया। उन्होंने सत्य के लिए अपने सुख का त्याग कर दिया। सत्य शोध की तीव्र अभीप्सा के द्वारा वे महापुरुष के रूप में उभरे। वर्धमानता के लिए आवश्यक है कि हमारे भीतर भी सत्य शोध अभिलाषा पुष्ट रहे। आचार्य भिक्षु के जन्म से पूर्व उनकी मां ने सिंह का स्वप्न देखा। मानों जन्म से पूर्व ही उन्हें सिंहवृत्ति प्राप्त हो गई और वह उनमें जीवन भर जागृत रही। वे पौरुष के प्रतिमान थे। जीवन के आठवें दशक में भी उनके पौरुष का दिया जलता रहा। उन्होंने अनेक ग्रंथों की रचना की, किन्तु वे स्वयं निर्ग्रंथ रहे। विरोधों में भी उनका उपशम भाव प्रबल रहा। उनका इन्द्रिय संयम, धृतिबल, मनोबल और बुद्धिबल विलक्षण था। उनका दृष्टिकोण नितांत आध्यात्मिक था।

वर्धमान महोत्सव के अवसर पर हमें यह संकल्प करना है कि आचार्य भिक्षु के वैशिष्ट्य को सम्मुख रखकर हमें अपने वैशिष्ट्य को जगाना है। आचार्य भिक्षु की भांति आचार्यश्री महाश्रमणजी का वैशिष्ट्य भी हमारे लिए आदर्श है। आप में हमें अतीत के दस आचार्यों के दर्शन होते हैं। आचार्यप्रवर स्वयं हमेशा वर्धमान हैं और संघ को भी निरंतर वर्धमान बनाए हुए हैं। हम आचार्यप्रवर के मंगल सान्निध्य में विशिष्ट बनने की दिशा में आगे बढ़ते रहें।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आज वर्धमान महोत्सव का तीसरा दिन है। आदमी सही दिशा में आगे बढ़े, यह काम्य है। ज्ञान, दर्शन और चारित्र के साथ क्षांति और मुक्ति में भी वर्धमान होना चाहिए। क्षांति अर्थात् सहिष्णुता, जीवन के लिए ही नहीं आत्मा के लिए लाभदायक होती है। हमारे में शारीरिक, वाचिक और मानसिक सहिष्णुता रहनी चाहिए। मनोबल होता है तो कष्टों को सहना कुछ आसान हो सकता है। चिकित्सक चिकित्सा का प्रयास कर सकता है, किन्तु मनोबल हो तो आदमी बीमारी को सह भी सकता है। जिनकल्पिक मुनि तो कष्टों को उदीर कर सहते थे। यह कितनी बड़ी साधना है। आदमी उतनी साधना न कर सके, किन्तु जो कष्ट आ जाएं, उन्हें सहन करने का प्रयत्न करना चाहिए। जिन कष्टों को चिकित्सक भी दूर न कर सके, उनमें मनोबल विशेष रूप में रहना चाहिए। उस स्थिति में आदमी को समत्व भाव में रहने का प्रयास करना चाहिए।

आदमी को वाचिक कष्टों को भी सहन करना चाहिए। कोई कटु अप्रिय बात भी कह दे तो भी उसे सहन करने का आयास करना चाहिए। प्रशस्त चिंतन का आलंबन हो तो सहन करना कुछ आसान हो सकता है। कोई गाली दे तो आदमी को यह सोचना चाहिए कि मैं उसे ग्रहण ही नहीं करता तो वह मुझे गाली कैसे दे सकता है। सामने वाला गुस्सा करे तो यह सोचना चाहिए कि इसके मोहनीय कर्म का उदय है, किन्तु मैं गुस्सा क्यों करूं। एक आदमी वमन (उल्टी) करता है तो उसे देखकर दूसरा उल्टी क्यों करे? इस प्रकार प्रशस्त चिन्तन का आलंबन ले लिया जाए तो आदमी सहन कर सकता है। व्यक्ति में वैचारिक सहिष्णुता भी होनी चाहिए विचार भेद होने पर भी असहिष्णु नहीं बनना चाहिए। आदमी यह सोचे कि मुझे अपना विचार रखने का अधिकार है तो सामने वाले को भी अपना विचार रखने का अधिकार है। मैं उसके विचारों को सुनकर गुस्सा क्यों करूं। यों

दूसरों के विचारों को भी सहन करना चाहिए। इस प्रकार आदमी को क्षांति में वर्धमान रहना चाहिए। संघर्षों में भी आदमी शांत रहकर उसके निवारण का रास्ता खोज सके, ऐसी सहिष्णुता का विकास करना चाहिए।

मुक्ति अर्थात् निर्लोभता में वर्धमान रहना चाहिए। जीवन के लिए आवश्यक और उपयोगी चीजों को रखना होता है, किन्तु पदार्थों के प्रति आकर्षण नहीं रहना चाहिए और उनका अनावश्यक संग्रह नहीं करना चाहिए। यह शरीर भी कभी छूटने वाला है तो पदार्थों के प्रति मोहभाव रखें भी क्यों? ये भी कभी छूटने वाले हैं।'

आचार्यप्रवर ने वर्धमानता के लिए प्रसंगवश संघ-संघपति के प्रति निष्ठा रखने, उपयोगी बनने, सेवानिष्ठा, गुरु की डांट को विनयपूर्वक सहने आदि की प्रेरणा भी प्रदान की। पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'वर्धमान महोत्सव मानों हमें वर्धमान बनने की प्रेरणा दे रहा है। बालमुनि और छोटी साध्वियों को और ज्यादा विकास करना है। क्योंकि इनके सामने संभावित लंबा भविष्य है। इनका अच्छा निर्माण हो, इनमें अच्छे संस्कार आएं, वैदुष्य और वक्तृत्व का विकास हो। साधना परिपुष्ट रहे। विनय-शिष्टता के संस्कार इनमें आएं, ऐसा प्रयास रहना चाहिए।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा--'विशिष्ट बनने के लिए शिष्ट बनना चाहिए। शिष्ट बनेंगे तो कभी विशिष्ट भी बन सकेंगे। शिष्टता के बिना वैशिष्ट्य को प्राप्त कैसे किया जा सकता है। आचार और व्यवहार शिष्ट रहे। हमारे साधु-साध्वियां और समण श्रेणी के सदस्य, भले यहां हैं या बाहर हैं, हम सभी में वर्धमानता रहे। हम ज्ञान, दर्शन, चारित्र, क्षांति और मुक्ति में वर्धमान रहें।'

कार्यक्रम के दौरान वर्धमान महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश बेताला ने पूज्यप्रवर के भुवनेश्वर के पंचदिवसीय प्रवास की सम्पन्नता के संदर्भ में अपनी विचाराभिव्यक्ति दी। प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री तथा श्रद्धानिष्ठ संगायक श्री कमल सेठिया ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए।

पूज्यप्रवर के पंचदिवसीय भुवनेश्वर प्रवास में शहर में आध्यात्मिक माहौल बना रहा। विभिन्न वर्गों, संप्रदायों और विभिन्न राजनैतिक दलों से जुड़े लोग पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगल मार्गदर्शन से लाभान्वित हुए। भुवनेश्वर के तेरापंथी श्रद्धालुओं ने भी अपने आराध्य के प्रथम प्रवास का भरपूर लाभ उठाया। धार्मिक कार्यों में कम रुचि रखने वाले तेरापंथी अनुयायी भी आचार्यप्रवर के इस प्रवास के दौरान संपर्क में आए, उन लोगों में न केवल चारित्रात्माओं की दर्शन-उपासना की रुचि जागृत हुई, अपितु सदा-सर्वदा संघ-संघपति के प्रति समर्पित रहने का मानसिक संकल्प भी जागृत हुआ। आवागमन के संसाधनों की सुविधा होने के कारण देश के विभिन्न क्षेत्रों से भी श्रद्धालु भुवनेश्वर पहुंचे और दर्शन सेवा का लाभ लिया।

भुवनेश्वर से प्रस्थित हुए त्रिभुवनेश्वर

१८ जनवरी। भुवनेश्वर के पंचदिवसीय प्रवास के उपरान्त परमाराध्य आचार्यप्रवर ने आज प्रातः पहाला की ओर प्रस्थान किया। प्रस्थान से पूर्व पूज्यप्रवर ने स्थानीय कार्यकर्ताओं से भुवनेश्वर के नवनिर्मित तेरापंथ भवन के विषय में अवगति प्राप्त की। पूज्यप्रवर से श्रद्धालुओं ने ऊपरी मंजिलों में पधारकर भवन अवलोकन की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर ने कुछ सीढ़ियों पर आरोहण कर श्रद्धालुओं को अनुगृहीत किया। विहार के दौरान कई लोगों ने अपने-अपने मकानों, दुकानों व अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन कर पूज्यप्रवर के मुखारविंद से मंगलपाठ का श्रवण किया। इस क्रम में अनेक जैन-जैनेतर लोग भी लाभान्वित हुए। एक व्यावसायिक प्रतिष्ठान के निकट उत्कल माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री लालचंद मोहांती, एकल विद्यालय के ओड़िशा प्रभारी श्री रणजीत स्वाईं आदि ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

मार्गस्थ 'कुआ खाई' नदी पर बने पुल से आचार्यप्रवर इस पार पधारे। करीब ८.० कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर पहाला में स्थित 'उत्कल हाइट्स' में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। उत्कल हाइट्स से संबंधित भूरा और बैद परिवार के सदस्य अपने आराध्य को अपने बीच पाकर धन्यता की अनुभूति कर रहे थे।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में अहिंसा को आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की।

उत्कल हाइट्स के निर्माता श्री सुभाष भूरा और श्री भंवरलाल बैद ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। उत्कल हाइट्स से जुड़े हुए भूरा और बैद परिवार की महिलाओं ने गीत के द्वारा आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना की। कोचर परिवार की महिलाओं ने आचार्यप्रवर के स्वागत में गीत का संगान किया। श्री प्रकाश भूरा, श्रीमती विमला भूरा और श्री शरद बैद ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी-अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी।

गोपालपुर में गणपाल

१६ जनवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः पहाला स्थित 'उत्कल हाइट्स' से गोपालपुर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग के समीप निर्मीयमाण 'ग्राण्ड बाजार' के समीप कटक कपड़ा व्यवसायी संघ से जुड़े लोगों और बाजार के निर्माता श्री सुभाष गुप्ता ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। बताया गया कि इस बाजार का निर्माण कटक निवासी कपड़ा व्यवसायियों के लिए किया गया है। इस हॉलसेल बाजार के निर्माता श्री गुप्ता पूज्यप्रवर के पदार्पण के संदर्भ में हैदराबाद से आए थे। पूज्यप्रवर ने वहां कुछ क्षण आसीन होकर समुपस्थित लोगों को पावन प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने विहार के दौरान भुवनेश्वर जिले की सीमा को अतिक्रांत कर कटक जिले में प्रवेश किया। लगभग १३.५ कि.मी. का विहार कर आचार्यप्रवर गोपालपुर में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में अपने पावन प्रवचन में अदत्तादान के परित्याग की प्रेरणा प्रदान की।

संसारपक्ष में ओड़िशा से संबंधित समणी मलयप्रज्ञाजी ने अमेरिका की यात्रा सम्पन्न कर आज पूज्यप्रवर के दर्शन किए। कार्यक्रम के दौरान उन्होंने गुरुदर्शन से प्राप्त प्रसन्नता को अभिव्यक्ति देते हुए अपनी सहवर्ती समणी रत्नप्रज्ञाजी के साथ गीत का संगान किया।

पूज्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'समणी मलयप्रज्ञा और समणी रत्नप्रज्ञा--दोनों ओड़िशा से संबद्ध हैं। आज ओड़िशा में इन्होंने दर्शन कर लिए हैं।'

१५४वें मर्यादा महोत्सव हेतु कटक में भव्य मंगल प्रवेश

२० जनवरी। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने प्रातः गोपालपुर से कटक की ओर प्रस्थान किया। आचार्यप्रवर के पदार्पण और १५४वें मर्यादा महोत्सव के आयोजन के संदर्भ में कटकवासियों का उल्लास चरम पर था। कटक के श्रद्धालु बड़ी संख्या में प्रातःकाल ही पूज्यप्रवर की पावन सन्निधि में पहुंच गए थे। काटजोड़ी नदी पर बना पुल पूज्यचरणों के स्पर्श से पावनता को प्राप्त हुआ। गोपाल-कृष्ण गोशाला के समीप गोशाला के महामंत्री श्री गणेश प्रसाद कन्दोई आदि ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर स्वागत किया। हरिहरानंद गुरुकुलम् जगन्नाथपुरी के स्वामी अरूपानंदजी ने भी पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए वेदमंत्रों से आचार्यप्रवर का अभिनन्दन किया। ओड़िशा के स्वास्थ्य एवं कानून मंत्री श्री प्रताप जेना और कटक के कलेक्टर श्री सुशांत महापात्र ने भी आचार्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। श्री जेना, श्री महापात्र, गोशाला से जुड़े हुए लोग और स्वामी अरूपानंदजी काफी दूर तक पूज्यप्रवर के आसपास पैदल भी चले। अनेक श्रद्धालु परिवारों ने अपने-अपने मकानों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के निकट आचार्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया। पूज्यप्रवर एक वयोवृद्ध महिला को दर्शन देने उसके घर में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन होकर 'श्रद्धा विनय समेत' गीत सुनाया। आचार्यप्रवर के अनुग्रह में अभिस्नात वह वयोवृद्ध महिला और उसके परिजन धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। पूज्यप्रवर

करीब ५.५ किलोमीटर का विहार परिसम्पन्न कर कटक में स्थित सेकेन्डरी बोर्ड हाइस्कूल में पधारे। पूज्यप्रवर का दोपहर तक का प्रवास और आज का प्रातराश व मध्याह्नकालीन आहार यहीं हुआ। विद्यालय प्रबंधन से जुड़े लोगों ने आचार्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

कटक उच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री मनोरंजन मोहांती, पूर्व न्यायाधीश श्री डी.एन. पटनायक तथा कटक की मेयर श्रीमती मीनाक्षी बेहरा आदि ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल पथदर्शन प्राप्त किया। वे लोग बोले--'हम लोग भी आज आपके साथ जुलूस में पैदल चलेंगे।'

पूज्यप्रवर के प्रातराश आदि के दौरान ओड़िशा के स्वास्थ्य एवं कानून मंत्री श्री प्रताप जेना पूज्यप्रवर के प्रवास कक्ष के बाहर खड़े थे। कार्यकर्ताओं ने उनसे जब नाश्ता करने के लिए बाहर चलने का अनुरोध किया तो वे बोले--'मुझे गुरुजी के आसपास ही रहने दीजिए। मैं जब-जब गुरुजी के पास रहता हूं तो मुझे ऐसा लगता है कि मुझे ऊर्जा मिल रही है। मैं इस ऊर्जा को प्राप्त करने के अवसर को खोना नहीं चाहता। इसलिए मुझे यहीं खड़ा रहने दीजिए।'

आचार्यप्रवर ने मध्याह्न में करीब १२.०५ बजे १५४वें मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में प्रवेश करने हेतु मंगल प्रस्थान किया। लंबे समय से आचार्यप्रवर की प्रतीक्षा में खड़े हजारों जैन एवं जैनेतर लोगों का उत्साह आचार्यप्रवर के प्रस्थान के साथ चरम को छूने लगा। चारों ओर प्रसन्नतामय वातावरण दृष्टिगोचर हो रहा था। हजारों लोगों की भीड़ और उसके उल्लास के बीच तेरापंथी और जैन एवं जैनेतर का भेद मानों छुप-सा गया था। अहिंसा यात्रा प्रणेता, शांतिदूत आचार्यप्रवर की एक झलक पाने के लिए हर कोई बेताब नजर आ रहा था।

तेरापंथ धर्मसंघ के किसी आचार्यप्रवर का प्रथम पदार्पण और धर्मसंघ के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण महोत्सव के आयोजन का सौभाग्य कटक के श्रद्धालुओं के लिए 'सोने पे सुहागा' जैसा था। इसलिए आज उनकी खुशी का ओर-छोर नजर नहीं आ रहा था। कटक के अन्य जैन एवं जैनेतर जनता अहिंसा यात्रा प्रणेता और तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यप्रवर के तेजोमय व्यक्तित्व के विषय में वर्षों से सुनती आई थी। इसलिए आचार्यप्रवर के साक्षात दर्शन की उत्सुकता उनमें अधिक दृष्टिगोचर हो रही थी। मकानों व दुकानों के बरामदे, छतें और गलियों के मोड़ दर्शनार्थी जनता से भरे हुए थे। आशीर्वाद की मुद्रा में उठे हुए आचार्यप्रवर के हस्तकमल दर्शनार्थियों को तृप्ति प्रदान कर रहे थे।

स्थान-स्थान पर खड़े सिक्ख समुदाय, मुस्लिम समुदाय, कटक मारवाड़ी समाज, उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, कटक जिला माहेश्वरी समाज, कटक शांति कमेटी, जैन मित्र मंडल, सीडीए मारवाड़ी समाज, मारवाड़ी युवामंच, श्री दशा श्रीमाली स्थानकवासी जैन संघ, श्रीरामचरितमानस पारायण समिति, जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज आदि से जुड़े हुए हजारों लोग आचार्यप्रवर की अगवानी कर भव्य स्वागत जुलूस में शरीक होते जा रहे थे। कटक जिला कांग्रेस के अध्यक्ष श्री मोहम्मद मुकीम भी अपने कार्यकर्ताओं के साथ स्वागत जुलूस में सोत्साह संभागिता लिए हुए थे। यत्र-तत्र खड़ी जैनेतर महिलाएं शंखनाद और 'हुलाहुली' के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित कर रही थीं। जयघोषों से वातावरण गुंजायमान बना हुआ था। श्री गोपाल-कृष्ण गोशाला, जैन मित्र मंडल, उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, कटक मारवाड़ी समाज और माहेश्वरी समाज से जुड़े हुए लोग यत्र-तत्र पेय पदार्थों आदि के माध्यम से जुलुस में संभागी लोगों की आवभगत कर रहे थे। अन्य जैन एवं जैनेतर समाज द्वारा यत्र-तत्र लगाए गए स्वागत द्वार उनके आंतरिक उल्लास को दर्शा रहे थे।

भव्य स्वागत जुलूस में जगन्नाथ रथयात्रा, पर्यावरण सुरक्षा, नशामुक्ति, नौ तत्त्वों से संबंधित झांकियां, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के लिए उल्लास अभिव्यक्ति का साधन बनी हुई थीं। गुरुनानक पब्लिक स्कूल, सेंट जेवियर्स स्कूल तथा जौहरीमल हाइस्कूल के विद्यार्थी भी कतारबद्ध होकर स्वागत जुलूस में सोत्साह संभागी बने हुए थे। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों के पीछे तेरापंथ कन्या मंडल और तेरापंथ महिला मंडल की सदस्याएं अपने-अपने गणवेश में जयनिनादों के माध्यम से अपने उत्साह को अभिव्यक्त करती हुई गतिमान थीं। विभिन्न

समाजों, संस्थानों से जुड़े हुए लोग बुलंद जयघोषों के द्वारा अहिंसा यात्रा प्रणेता के चरणों में अपनी भावांजलि अर्पित कर रहे थे। कतारबद्ध मुमुक्षु बहनें, समणीवृंद और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वीवृंद, अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यप्रवर की अमल-धवल किरणों की भांति आचार्यप्रवर के आगे-आगे गतिमान थीं। लहराता हुआ जैन ध्वज पूज्यप्रवर के पदार्पण का संकेत लिए हुए था।

सबके आकर्षण का केन्द्र बने हुए धीर-गंभीर चरणों से गतिमान तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यप्रवर अपने करकमलों से सब पर आशीष वृष्टि करते हुए जनता के श्रद्धा भावों को स्वीकार कर रहे थे। पूज्यप्रवर के हस्तावलंबन की आकांक्षा से मुख्यमुनिश्री पूज्यप्रवर के परिपार्श्व में गतिशील थे। कतारबद्ध साधु समाज पूज्यपदचिन्हों का अनुगमन करते हुए गतिमान था। मुनिवृंद के पीछे श्रद्धालु श्रावक समाज के साथ सैंकड़ों जैनेतर लोग भी बुलंद जयघोषों से वातावरण को गुंजायमान बनाए हुए थे। तेरापंथ युवक परिषद और तेरापंथ किशोर मंडल के युवकों और किशोरों का आध्यात्मिक जोश आज मानों आसमान को छू रहा था। इस प्रकार जुलूस मार्ग और उसके आसपास का वातावरण महाश्रमणमय बना हुआ था।

यद्यपि आचार्यप्रवर भरी दुपहरी में १५४वें मर्यादा महोत्सव हेतु मंगल प्रवेश कर रहे थे और सूर्य भी प्रखर रूप धारण किए हुए था, किन्तु बाजार और घनी आबादी के कारण मार्ग पर छाया बनी हुई थी। बजकरबाटी रोड स्थित बोर्ड स्कूल से प्रारम्भ हुआ भव्य स्वागत जुलूस, रानीहाट, मंगलाबाग, नुआपटना, कोन्टेनमेंट रोड, स्टेडियम रोड होते हुए बाराबाटी स्टेडियम परिसर में पहुंचा। अभी प्रवेश के निर्धारित समय में कुछ समय अवशिष्ट था। आचार्यप्रवर परिसर में स्थित भारतीय सेना के स्थान में कुछ समय विराजमान हुए और कुछ समय पश्चात् शुभ मुहूर्त में करीब १.५१ बजे सचिन तेंदुलकर इंडोर हॉल में मंगल प्रवेश किया। पूज्यप्रवर का मर्यादा महोत्सवकालीन प्रवास अर्थात २६ जनवरी अपराह्न तक का प्रवास यहीं हुआ।

प्रवास स्थल में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मोहनलाल सिंघी और तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री मोहनलाल चोरड़िया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने पृथक्-पृथक् स्वागत गीत का संगान किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर अहिंसा यात्रा के द्वारा जो कार्य कर रहे हैं, वह बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। इस यात्रा के तीन उद्देश्य हैं--सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति। ये तीन उद्देश्य बहुत ही प्रासंगिक हैं। आचार्यप्रवर इस यात्रा के द्वारा जनजीवन को उन्नत बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। आज परमाराध्य आचार्यप्रवर का मर्यादा महोत्सव की दृष्टि से कटक में आगमन हुआ है। कटकवासियों का सपना साकार हुआ है। इस प्रवास के दौरान आचार्यप्रवर से जो दिशा प्राप्त हो, कटकवासी उस ओर बढ़कर अपने जीवन को उन्नत बनाएं, यह अपेक्षा है।'

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'हमारी दुनिया में उत्कृष्ट स्तर की अनेक चीजें हो सकती हैं। जिस क्षेत्र में जो उत्कृष्ट होता है, वह रत्न होता है। जिसकी ज्यादा उपयोगिता हो, वह भी रत्न कहा जा सकता है। जल, अन्न और सुभाषित वाणी को उपयोगिता की दृष्टि से रत्न माना जा सकता है। मंगल के क्षेत्र में धर्म रत्न है, क्योंकि वह उत्कृष्ट है। अहिंसा, संयम और तप धर्म है। यह त्रिआयामी धर्म जीवन में रहता है तो मानना चाहिए कि जीवन में उत्कृष्ट मंगल है। जिसका मन धर्म में सदा रत रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। आदमी को मंगल चाहिए तो उसे जीवन में धर्म को अपनाना होगा। मुहूर्त देखा जाता है, उसकी उपयोगिता हो सकती है, किन्तु उससे भी बड़ा मंगल है धर्म। धर्म का प्रभाव नहीं है तो जीवन में मंगल नहीं हो सकता। अर्हतों, सिद्धों और साधुओं को मंगल कहा गया है। इनके निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि केवली प्रज्ञप्त धर्म मंगल है।

हम लोग जैन धर्म से जुड़े हुए हैं। भगवान महावीर के पथ के पथिक हैं। जैन शासन में एक संत हुए आचार्य भिक्षु। वे हमारे धर्मसंघ 'जैन श्वेताम्बर तेरापंथ' के प्रथम गुरु थे। हम उनके द्वारा प्रवर्तित धर्मसंघ में साधना कर रहे हैं। इस धर्मसंघ की सम्माननीय आचार्य परंपरा के चतुर्थ अनुशास्ता श्रीमज्जयाचार्य हुए। जो बहुत अच्छे गीतकार थे। वे मर्यादा महोत्सव के प्रणेता थे। हमारे तेरापंथ की सम्माननीय परम पूज्य आचार्य परंपरा में नवमें आचार्य गुरुदेव तुलसी हुए। जिनके दर्शन करने का सौभाग्य इन कितनी आंखों को प्राप्त हुआ था। कितने मस्तकों को उनके चरण का स्पर्श का मौका मिला था। कितनों को उनके सान्निध्य में रहने का सुअवसर मिला था। उनका अपना तेजस्वी और ओजस्वी व्यक्तित्व था। उनके उत्तराधिकारी परम पूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी हुए। जिनके चरणों में हम लोग रहे थे। उनका अपना अदुष्य वैदुष्य था। उनके प्रवचन में गांभीर्य था, वाणी में माधुर्य था और चिंतन में चातुर्य था। (पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश गीतों के द्वारा आचार्य भिक्षु, गुरुदेव तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञजी की स्तवना की।)

आज हम जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के १५४वें मर्यादा महोत्सव को आयोजित करने के लिए कटक में आए हैं। परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी की आशीर्वाणी मानें कि हम लोग कटक (ओड़िशा) में तेरापंथ धर्मसंघ के वार्षिक महोत्सव के संदर्भ में यहां प्रविष्ट हुए हैं। हमारा धर्म परिवार, जिसमें साध्वीप्रमुखाजी, कितनी चारित्रात्माएं, समणश्रेणी के सदस्य हैं, हमारे साथ आया है। कुछ पहले भी आ गए होंगे। मर्यादा महोत्सव का यहां तो फिर भी छोटा रूप है। राजस्थान में तो बहुत विराट रूप हो जाता है साधु-साध्वियों की संख्या का वह विराट रूप तो इतनी दूरी से संभवतः नहीं हो पाएगा, परन्तु दूर बैठे-बैठे साधु-साध्वियां संभवतः इस कार्यक्रम को देख सकेंगे, सुन सकेंगे। आज हम कटक पहुंचे हैं। कटक के न केवल तेरापंथी समाज, अपितु कितने समाजों से जुड़े हुए लोग हमें मार्ग में मिले थे। हमारा उनसे सम्पर्क हुआ था। सबमें सद्भावना, नैतिकता नशामुक्ति रहे। मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में सारा कार्यक्रम मंगल बने, मंगलकामना।'

कटक में शांतिदूत का नागरिक अभिनन्दन

२१ जनवरी। बालियात्रा पड़िया में निर्मित विशाल मर्यादा समवसरण में आयोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आदमी के लिए सम्यक् दर्शन के महत्त्व को विवेचित करते हुए उसे परिपुष्ट रखने की प्रेरणा प्रदान की।

पूज्यप्रवर ने कटकवासियों को अहिंसा यात्रा के विषय में अवगति और प्रेरणा प्रदान कर संकल्पत्रयी ग्रहण करवाई। कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के प्रवचन से पूर्व साध्वीवर्याजी का भी उद्बोधन हुआ। गत चतुर्मास कटक में करने वाली साध्वी त्रिशलाकुमारीजी ने पूज्यप्रवर के समक्ष अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए तथा उनकी सहवर्ती साध्वी रश्मिप्रभाजी ने अंग्रेजी भाषा में गीत का संगान किया। साध्वी पुनीतप्रभाजी ने भी अपनी भावाभिव्यक्ति दी। संसारपक्ष में कटक से संबंधित मुनि आकाशकुमारजी ने आराध्य के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के नागरिक अभिनन्दन का भी उपक्रम रहा। मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मोहनलाल सिंघी, स्वागताध्यक्ष श्री मंगलचंद चौपड़ा, तेरापंथी सभाध्यक्ष श्री मोहनलाल चोरड़िया, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री मालचंद सिंघी, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री अरविन्द बैद, महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती इन्दिरा लूणिया तथा उपासक श्री पानमल नाहटा ने पूज्यप्रवर का आस्थासिक्त अभिनंदन किया। महिला समिति की अग्रणी श्रीमती संपति मोढ़ा ने काव्य पंक्तियों की प्रस्तुति के माध्यम से पूज्यश्री का अभिनन्दन किया। तेरापंथ कन्या मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने अपनी सधी हुई रोचक प्रस्तुति के द्वारा पूज्यचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए और संकल्पों का उपहार भी समर्पित किया। जैन मित्र मंडल के अध्यक्ष श्री मणि सेठिया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी अभिव्यक्ति दी।

ओड़िशा सरकार के वित्त एवं राजस्व मंत्री श्री शशिभूषण बेहरा ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा कि

यह हमारा सौभाग्य है कि अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी ४२००० कि.मी. से ज्यादा चलकर मेरी जन्मभूमि कटक में पधारे हैं। मैं कटक शहर, ओड़िशा प्रान्त और राज्य सरकार की ओर से आपका स्वागत-अभिनन्दन करता हूं। आपके पदार्पण से ओड़िशा के सांस्कृतिक मूल्यों को बल मिलेगा। आपने हिंसा के निवारण के लिए जो महाअभियान चलाया है, मैं उसके लिए आपको कोटि-कोटि नमन करता हूं। आपकी यात्रा सफल व मंगलमय हो।'

ओड़िशा सरकार के स्वास्थ्य मंत्री श्री प्रताप जेना ने कहा--'मर्यादा पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी को मैं शत-शत प्रणाम करता हूं। भगवान जगन्नाथ की भूमि पर मैं समस्त ओड़िशावासियों की ओर से आपका स्वागत और अभिनन्दन करता हूं। आपके आगमन से सभी ओड़िशावासी अत्यंत खुश हैं। गुरुजी! आपका आशीर्वाद हमेशा हम ओड़िशावासियों और हमारी सरकार पर बना रहे।'

ओड़िशा विधानसभा के सचेतक श्री अमरजीत सत्पथी ने कहा--'परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का ओड़िशा की ऐतिहासिक और पावन भूमि पर मैं बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूं। आपकी अहिंसा यात्रा आज के इस युग में अत्यंत प्रासंगिक है। इस यात्रा के तीनों उद्देश्य व्यक्ति, समाज, राष्ट्र और विश्व के लिए बहुत ही आवश्यक हैं।'

समाजसेवी एवं उद्योगपति डॉ. किशनलाल भरतिया ने कहा--'सद्गुरुदेव! आपके आगमन से हम सभी आह्लादित हैं। हमारा हृदय गदगद है। हमारी वाणी में वह सामर्थ्य नहीं जो आपका स्वागत कर सकें। महाराज! आप हम सभी को ऐसी दृष्टि से देखिए कि हमारा जीवन आचरण युक्त बने।'

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन की ओर से श्री सूर्यकांत सांगनेरिया ने कहा--'परम पूजनीय आचार्यश्री महाश्रमणजी के पदार्पण से कटक शहर धन्य हो गया। उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन, कटक महानगर शांति कमेटी, कटक वरिष्ठ नागरिक महासभा और बाराबाटी सर्वधर्म सांस्कृतिक परिषद की ओर से आपका कोटि-कोटि अभिनन्दन करता हूं। मेरा यह सौभाग्य है कि मुझे महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे महर्षि के अभिनन्दन का सुअवसर मिला है। आपके रूप में एक महान गुरु के दर्शन कर मैं धन्य-धन्य हो गया।'

कटक मारवाड़ी समाज के अध्यक्ष श्री विजय खंडेलवाल ने कहा--'संपूर्ण कटक मारवाड़ी समाज की ओर से शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी का अभिनन्दन करता हूं। आप जैसी विभूति के आगमन से पूरा उत्कल प्रान्त धन्य हो गया। आचार्यश्री! आप में वह शक्ति है, जिसे प्राप्त करना हम लोगों के लिए असंभव है। इसलिए आप जो चाहते हैं, वह पूरा होता है। आपने हमें जो संकल्प दिलाए, हम उनका दृढ़ता से पालन करेंगे। कटक में मारवाड़ी समाज की जनसंख्या करीब एक लाख है। मैं संपूर्ण मारवाड़ी समाज की ओर से आपका कोटि-कोटि अभिनंदन करता हूं।'

उद्योगपति व श्री गोपाल-कृष्ण गोशाला के महामंत्री श्री गणेशप्रसाद कन्दोई ने कहा--'हमारे लिए अत्यंत प्रसन्नता की बात है कि हमारे कटक शहर में ऐसे महान संत का आगमन हुआ है, जिन्होंने देश-विदेश में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की अलख जगाई है। इस आयोजन के लिए आचार्यश्री ने कटक शहर को चुना, इसके लिए संपूर्ण कटकवासी आपके आभारी हैं। आप ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि आपके द्वारा करवाए गए तीनों संकल्पों को हम अक्षरशः निभाते रहें।'

कटक माहेश्वरी समाज की ओर से श्री मदन मोहन राठी ने कहा--'हम कटकवासी अत्यंत सौभाग्यशाली हैं कि आचार्यश्री महाश्रमणजी का यहां पदार्पण हुआ है। आप यों तो तेरापंथ समाज के आचार्य हैं, किन्तु आपका मिशन 'सर्वजन हिताय, सर्वजन सुखाय' है। आप जैसे महान संत के विषय में सुना बहुत था, किन्तु आज साक्षात् दर्शन कर मैं धन्य हो गया। संपूर्ण माहेश्वरी समाज की ओर मैं आपका अभिनन्दन करता हूं।'

दिगम्बर जैन समाज की ओर से श्री कमल धनावत ने कहा--'ओड़िशा दिगम्बर जैन समाज की ओर

से मैं आपके चरणों में शीश नमाता हूं। आपकी इस महान यात्रा से ओड़िशा में जैन धर्म का प्रभाव पुनः व्यापक बनेगा।'

सीडीए (कटक डवलपमेंट ऑथोरिटी) मारवाड़ी समाज की ओर से श्री अशोक शर्मा ने कहा--'गुरुजी! आपका यह आगमन श्री भगवान जगन्नाथ और मां कटक चंडी की नगरी कटक के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जाएगा। आपने हमारे पूरे प्रदेश में जो अहिंसा, सद्भावना की ज्योति जलाई है, वह सदियों तक जलती रहेगी। उच्च विचारों से युक्त आपका सादगीपूर्ण जीवन युवा पीढ़ी को बहुत प्रभावित कर रहा है। मैं स्वयं आपसे बहुत प्रभावित हूं। मैं कोशिश करूंगा कि आपके उपदेशों के अनुरूप अपना जीवन बनाऊं।'

नंदगांव गोशाला की ओर से श्री कमल सिकरिया ने कहा--'आज मां कटकचंडी की पवित्र धरा पर आचार्यश्री महाश्रमणजी के आगमन, दर्शन और मार्गदर्शन से हम सभी का जीवन कृतकृत्य हो गया। आपका संदेश आज के युग में बहुत प्रासंगिक है। हम सभी आपके बताए मार्ग पर आगे बढ़ने का प्रयास करेंगे।'

स्थानकवासी समाज के श्री अशोक नाहटा ने कहा--'कल दो-दो सूर्य एक साथ कटक की धरा पर उदित हुए। आचार्यश्री महाश्रमणजी के पदार्पण से हमारा शहर धन्य हो गया। कटक एक आध्यात्मिक शहर है। आपके पदार्पण से यह धरा धन्य हो गई। कटक ने जल सैलाब देखा है, जन सैलाब भी देखा है, लेकिन आपके नेतृत्व में जो आध्यात्मिक सैलाब आया है, वह अद्वितीय है। उससे कटक का कण-कण स्वर्णमय बनेगा। मैं कटक स्थानकवासी समाज की ओर से आपका अभिनन्दन करता हूं।'

श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ की ओर से श्री ज्ञानचंद नाहर ने कहा--'आज कटक नगर में आपके पदार्पण से हम सभी जैन मूर्तिपूजक संघ के लोग हर्षित हैं। ओड़िशा आध्यात्मिक नगरी है, किन्तु आपके पदार्पण से यहां की आध्यात्मिकता में चार चांद लग गए हैं।'

बीजेडी (बीजू जनता दल) के जनरल सेक्रेटरी व नुआपाड़ा के पूर्व विधायक तथा पश्चिम ओड़िशा जैन संघ के अग्रणी नेता श्री राजू ढोलकिया ने ओड़िशा व छत्तीसगढ़ साधुमार्गी जैन संघ और खरियार जैन संघ की ओर से आचार्यप्रवर का अभिनन्दन किया। कार्यक्रम का संचालन मर्यादा महोत्सव प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री माणकचंद पुगलिया ने किया।

ओड़िशा पुलिस के स्पेश्यल ऑपरेशन ग्रुप के एसपी श्री राहुल जैन ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगल मार्गदर्शन प्राप्त किया। ज्ञातव्य है कि श्री राहुल स्वयं तेरापंथी हैं।

१५४वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम का शुभारम्भ

२२ जनवरी। माघ शुक्ला पंचमी। १५४वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम का शुभारम्भ मध्याह्न करीब सवा बारह बजे से 'बालियात्रा पडिया' में निर्मित विशाल मर्यादा समवसरण में तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के मुखारविन्द से उच्चरित नमस्कार महामंत्र से हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने करीब २१५ वर्षों पूर्व तेरापंथ धर्मसंघ के प्रवर्तक महामना परम पूज्य आचार्य भिक्षु द्वारा लिखित मर्यादा पत्र की स्थापना से पूर्व कहा--'मैं जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के १५४वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय समारोह के शुभारम्भ की घोषणा करता हूं और यह पत्र, गणछत्र है, जिसमें मर्यादाओं का आलेख है। यह आचार्य भिक्षु से संपृक्त है, मर्यादाओं के प्रति सम्मान का भाव अभिव्यक्त करते हुए इस गणछत्र पत्र को स्थापित करता हूं।'

(पूज्यप्रवर ने मर्यादा पत्र जनता को दिखाते हुए उसे अहोभाव के साथ अपने सम्मुख स्थापित किया।) मुनि दिनेशकुमारजी ने मर्यादा घोषों के उच्चारण के पश्चात् मर्यादा गीत 'भीखणजी स्वामी! भारी मर्यादा बांधी संघ में' का संगान किया।

तत्पश्चात् साधु-साध्वियों द्वारा सेवा की प्रार्थना का उपक्रम रहा। साध्वियों की ओर से साध्वी जिनप्रभाजी

तथा मुनिवृंद की ओर से मुनि कुमारश्रमणजी ने सेवा की प्रार्थना प्रस्तुत की। साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर पूज्यप्रवर से सेवा का अवसर प्रदान करने हेतु निवेदन किया।

मुख्यनियोजिकाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'जो व्यक्ति सेवा कार्य में लग जाता है, वह परम लक्ष्य के निकट पहुंच सकता है। सेवा एक ऐसा तत्त्व है, जो हर संप्रदाय में मान्य है। वह संघ दीर्घजीवी होता है, जहां सेवा का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। सेवा के लिए संवेदनशील हृदय की आवश्यकता होती है। परम पूज्य आचार्यप्रवर संपूर्ण संघ की सार-संभाल करते हुए इसकी महान सेवा कर रहे हैं। जहां कहीं सेवा का प्रसंग होता है, आचार्यप्रवर उसकी उपेक्षा नहीं करते। बड़ी से बड़ी साध्वी हो या छोटी से छोटी साध्वी, आचार्यप्रवर अपेक्षानुसार सबकी सेवा की व्यवस्था करते हैं। आचार्यप्रवर वृद्ध और रुग्ण ही नहीं, बाल साधु-साध्वियों के विकास और अपेक्षानुसार उनकी सेवा की भी समुचित व्यवस्था करते हैं। मेरा ऐसा मानना है कि आचार्यप्रवर और सब कार्यों की अपेक्षा सेवा को अधिक महत्त्व देते हैं।

हमारे संघ का इतिहास इस बात का साक्षी है कि हमारे साधु-साध्वियों ने सेवा के क्षेत्र में कितने-कितने उदाहरण प्रस्तुत किए हैं। हमें गौरव की अनुभूति होती है कि हम ऐसे संघ में साधना कर रहे हैं, जहां साधु-साध्वियों ने सेवा के द्वारा इस संघ की नींव को और अधिक गहराने का प्रयास किया है। आचार्यप्रवर हम सबमें सेवा के संस्कारों को परिपुष्ट बनाने की दृष्टि से सतत सजग हैं। आप हमें ऐसा आशीर्वाद प्रदान करें कि हम सेवा के द्वारा स्वयं का विकास कर सकें और धर्मसंघ की प्रभावना में अपना योगदान दे सकें।'

इस अवसर पर परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त पावन प्रवचन पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

मित्र परिषद द्वारा प्रकाशित तिथि दर्पण अध्यक्ष श्री प्रमोद नाहटा, जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित जय तिथि पत्रक अध्यक्ष श्री रमेश बोहरा तथा मुख्य न्यासी श्री पुखराज बड़ोला, संबोधन-अलंकरण प्राप्तकर्ता परिचय पुस्तिका महासभा के अध्यक्ष श्री किशनलाल डागलिया आदि ने पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की। तेरापंथ समाज कटक द्वारा गीत का सामूहिक संगान किया गया। तेरापंथ विकास परिषद के सदस्य श्री पदमचन्द पटावरी ने अपनी विचाराभिव्यक्ति दी।

साध्वी गुलाबकुमारीजी (सरदारशहर) की स्मृति सभा

गत १६ जनवरी २०१८ को जसोल में शासनश्री साध्वी 'गुलाबकुमारीजी (सरदारशहर) का प्रयाण हो गया। कार्यक्रम में उनकी स्मृतिसभा का उपक्रम भी रहा। पूज्यप्रवर ने उनके विषय में उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा--'प्राप्त जानकारी के अनुसार साध्वी गुलाबकुमारीजी का जन्म लाडनूं के कठोतिया परिवार में हुआ। उनका विवाह सरदारशहर के दसाणी परिवार में हुआ। पति वियोग के पश्चात् उन्होंने विक्रम संवत २०११ में परम पूज्य गुरुदेव तुलसी से साध्वी दीक्षा स्वीकार की। दीक्षा के बाद करीब अठारह वर्षों तक मातुश्री साध्वी वदनांजी के साथ तथा तीन वर्ष गुरुकुलवास में रहीं। विक्रम संवत २०४१ में आचार्य तुलसी द्वारा उन्हें अग्रगण्य नियुक्त किया गया। वे पात्रों की रंगाई आदि तथा प्रतिलिपि लेखन में दक्ष साध्वी थीं। मैंने विक्रम संवत २०६६ के जसोल चतुर्मास के दौरान उन्हें 'शासनश्री' संबोधन से संबोधित किया। विक्रम संवत २०७४ को माघ शुक्ला द्वितीया को सायं लगभग ५.४५ बजे करीब बीस मिनिट के चौविहार अनशन में उनका प्रयाण हो गया।

साध्वी गुलाबकुमारीजी को मुझे एक भद्र स्वभाव की और अच्छी साध्वी प्रतीत हुईं। वे विदा हो गईं, उनके साथ साध्वी भानुकुमारीजी आदि साध्वियां थीं। मैंने साध्वी भानुकुमारीजी को अग्रगण्य नियुक्त किया है। साध्वी गुलाबकुमारीजी की जो सहवर्ती साध्वियां थीं, वे सभी अच्छा कार्य करें। साध्वी गुलाबकुमारीजी की आत्मा मोक्ष प्राप्ति तक उत्तरोत्तर विकास करती रहे।'

उनकी स्मृति में आचार्यप्रवर के साथ चतुर्विध धर्मसंघ ने चार लोगस्स का ध्यान किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने इस प्रसंग में कहा--'साध्वीश्री गुलाबकुमारीजी का जन्म लाडनूं में हुआ

और दीक्षा से पहले शादी सरदारशहर में हुई। दीक्षित होने के बाद से मातुश्री वदनांजी के साथ रहीं और मातुश्री वदनांजी की उन्होंने जिस अहोभाव के साथ सेवा की, वह सेवा का एक उदाहरण है। मातुश्री उनकी सेवा से बहुत संतुष्ट रहती थीं। वे हमारे धर्मसंघ की एक सेवाभावी और विनम्र साध्वी थीं। बड़ी साध्वियों के साथ बात करते हुए उनके हाथ प्रायः जुड़े हुए ही रहते थे। वे मधुरभाषिणी भी थीं। यद्यपि अधिक पढ़ी-लिखी साध्वी नहीं थीं, किन्तु जहां-जहां उन्होंने चतुर्मास प्रवास किया, वहां-वहां उन्होंने अपने मधुर और विनम्र व्यवहार से धर्मसंघ की अच्छी प्रभावना की। ऐसी साध्वियां अपनी सेवा भावना, मधुर और विनम्र व्यवहार से साध्वी समाज की प्रेरणा बन जाती हैं। साध्वी गुलाबकुमारीजी पिछले समय से अस्वस्थ थीं। आचार्यप्रवर ने उन्हें उपचार का अवसर भी प्रदान किया, किन्तु आयुष्य की अपनी स्थिति होती है। उन्होंने अपनी संयम यात्रा संपन्न कर ली। अब उनकी आत्मा उत्तरोत्तर विकास करती रहे, यही मंगलकामना।'

मर्यादा महोत्सव का मध्य दिन

२३ जनवरी। १५४वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय समारोह का मध्य दिन। कार्यक्रम का प्रारम्भ परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार से प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में उपासकश्रेणी और मुमुक्षु बहनों ने पृथक्-पृथक् प्रस्तुत किए।

साध्वीवर्याजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'जो जागरूकता के साथ मर्यादाओं का पालन करता है, वह मेधावी होता है। मर्यादा में रहने वाला व्यक्ति और संगठन अपना अस्तित्व सुरक्षित रख सकता है। साधुत्व के लिए मर्यादाएं त्राण, प्राण और जीवन हैं। आचार्य भिक्षु ने तेरापंथ धर्मसंघ की नींव में मर्यादाओं को स्थापित किया। मानों तेरापंथ और मर्यादा एक-दूसरे के पर्याय हैं। धर्मसंघ में मर्यादाओं के निर्माण की पृष्ठभूमि में पांच उद्देश्य बताए गए हैं--संविभाग, समभाव, पारस्परिक सौहार्द, व्यवस्था और कलहमुक्ति। ये पांचों उद्देश्य परस्पर जुड़े हुए हैं। तेरापंथ धर्मसंघ का सौभाग्य है कि उन्हें संस्थापक के रूप में आचार्य भिक्षु का नेतृत्व प्राप्त हुआ। श्रीमज्जयाचार्य ने मर्यादाओं को महोत्सव का रूप दिया। तेरापंथ को सुव्यवस्थित रूप ओर ऊचाईयां देने के लिए उन्होंने अनेक अवदान प्रदान किए। तेरापंथ की गौरवशाली आचार्य परंपरा में हमें वर्तमान में आचार्यश्री महाश्रमणजी का वरद सन्निधि प्राप्त है। आचार्यप्रवर अपनी मृदु अनुशासना से संघ के सदस्यों के दिलों में अपना स्थान बनाए हुए हैं। संघ के सदस्यों की चित्त समाधि के लिए आचार्यप्रवर सतत सजग रहते हैं। आज के इस शुभ अवसर पर हम सभी यह संकल्प करें कि हम गुरु दृष्टि की आराधना करते हुए संघ की प्रभावना में अहर्निश लगे रहेंगे।'

मुख्यमुनिश्री ने अपने अभिभाषण में कहा--'पूर्वोत्तर भारत की ऐतिहासिक यात्रा को संपन्न कर परम पूज्य आचार्यप्रवर १५४वें मर्यादा महोत्सव को मनाने के लिए कटक में पधारे हैं। आचार्य भिक्षु ने चारित्रिक विशुद्धि की नींव पर तेरापंथ का शिलान्यास किया। वे एक क्रान्तिकारी आचार्य थे। उन्होंने आचार, विचार और धर्म की क्रांति की, उस क्रांति का ही प्रतिफल है तेरापंथ धर्मसंघ। आचार्य भिक्षु ने मन, वचन और तन को साध लिया था, इसीलिए वे ऐसी विलक्षण क्रांति कर पाए। उन्होंने अपने नवीन क्रांतिकारी और दूरदर्शी सोच के द्वारा ऐसी मर्यादाओं का निर्माण किया, जिनके आधार पर तेरापंथ धर्मसंघ सदियों बाद भी अक्षुण्ण बना हुआ है। आचार्य भिक्षु की भांति हमारे वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमणजी ने भी अपने मन, वचन और तन को साध लिया है। आप अपनी इस साधना के द्वारा धर्मसंघ को शिखरों की ओर प्रवर्धमान बनाए हुए हैं। आप भी आचार्य भिक्षु की भांति अतिशयधर महापुरुष हैं। कितने-कितने घटना प्रसंग आचार्यप्रवर की चमत्कारिता के साक्ष्य हैं। ऐसे महान आचार्यप्रवर के नेतृत्व में पूरा धर्मसंघ विकास की दिशा में तीव्र गति से आगे बढ़े।'

कटक मर्यादा महोत्सव व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री मोहनलाल सिंघी ने पूज्यचरणों में कृतज्ञभाव अर्पित करते हुए आगंतुकों का स्वागत किया। चेन्नई चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के महामंत्री श्री रमेश बोहरा ने

पूज्यप्रवर के चेन्नई चतुर्मास, कोयम्बत्तूर प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री विनोद लूणिया ने पूज्यप्रवर के कोयम्बत्तूर मर्यादा महोत्सव और विशाखापट्टनम अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति की ओर से कमल बैद ने आगामी अक्षय तृतीया के संदर्भ में आमंत्रण प्रस्तुत किया। चेन्नई और कोयम्बत्तूर की ओर से पृथक्-पृथक् गीत की भी प्रस्तुति हुई।

जैन विश्व भारती के समण संस्कृति संकाय द्वारा आयोज्य आगम मंथन प्रतियोगिता के अंतर्गत 'आवस्सयं' की प्रश्न पुस्तिका तथा शासनश्री साध्वी सूरजकुमारीजी (सरदारशहर) की जीवनी 'यात्रा सूरज की' प्रकाशक जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री रमेश बोहरा आदि, श्रीमती चंपाबाई संचेती के परिजनों द्वारा 'मां के नुस्खे' पुस्तक, 'तेरापंथ महान' पेन ड्राइव श्री प्रकाश-प्रफुल्ल बेताला व श्री कमल सेठिया, अमरचंद दसाणी परिवार द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'वन्दे-गुरुवरम्' 'हे प्रभो यह तेरापंथ' पुस्तक टीपीएफ द्वारा प्रकाशित न् २०१८ का कैलेण्डर अध्यक्ष श्री प्रकाश मालू ने पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित किया।

संबोधन अलंकरण सम्मान समारोह

सन् २०१७ में परमाराध्य आचार्यप्रवर द्वारा विभिन्न संबोधनों से संबोधित श्रावक-श्राविकाओं का सम्मान आज के कार्यक्रम में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा द्वारा किया गया। इस क्रम में पूज्यप्रवर द्वारा विविध संबोधनों से संबोधित १२५ लोगों को महासभा द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने इस संदर्भ में कहा--'महासभा द्वारा संबोधन अलंकरण सम्मान समारोह आयोजित हुआ। जिन्हें यह सम्मान प्राप्त हुआ है, वे सभी साधना और श्रद्धा-भावना में आगे बढ़ें। खूब अच्छा आध्यात्मिक विकास करें। महासभा भी खूब धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियों को आगे बढ़ाए।'

१५४वां मर्यादा महोत्सव मुख्य समारोह

२४ जनवरी। माघ शुक्ला सप्तमी। तेरापंथ धर्मसंघ के १५४वें मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय समारोह का मुख्य दिन। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता परम पूज्य आचार्यप्रवर के पदार्पण के साथ ही विशाल मर्यादा समवसरण 'वन्दे गुरुवरम्' से गूंज उठा। पूज्यप्रवर के नमस्कार महामंत्रोच्चार से प्रारम्भ हुए कार्यक्रम में मुनि दिनेशकुमारजी ने घोष उच्चरित करते हुए मर्यादा गीत का संगान किया। कार्यक्रम में समणीवृंद ने 'दुनिया को सुनाते महाश्रमण मर्यादा का संदेश', साध्वीवृंद ने 'तेरापंथ का हर अनुयायी गणमाटी शीश चढ़ाता है' तथा मुनिवृंद ने 'यह संघ हमारा' गीत का संगान किया।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'तेरापंथ धर्मसंघ हमें विरासत में मिला है। यह अद्वितीय धर्मसंघ है। इस पर हमें गौरव है। हमारे संघीय संस्कार इतने पुष्ट रहें कि तेरापंथ धर्मसंघ का कोई भी सदस्य भैक्षवशासन को हमेशा छत्र के रूप में धारण रखे। आज मर्यादा महोत्सव का प्रसंग है। तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादाओं पर आधारित है। आचार्य भिक्षु विलक्षण महापुरुष थे। उन्होंने उस समय जो मर्यादाएं निर्मित कीं, वे आज भी प्रासंगिक बनी हुई हैं। संघ की दीर्घजीविता का आधार है--इसके सदस्यों का अपने आचार, मर्यादाओं और अनुशासन के प्रति निष्ठा का भाव।

यह संघ हमारा त्राण है। हमें सबकुछ संघ से प्राप्त हो रहा है। हमारी पहचान संघ से है। हम भी संघ के लिए कुछ करें, यह हमारा कर्त्तव्य है। गुरुदृष्टि की आराधना के द्वारा हम संघ की सेवा कर सकते हैं। हम संघ और संघपति की ही नहीं, संघ के किसी सदस्य की भी अनुपयुक्त स्थान पर आलोचना-निंदा न करें और न ही सुनें तो यह भी संघ की एक सेवा हो सकती है। संघ विमुख साधु-साध्वियों और श्रावक-श्राविकाओं से हम दूर रहें, उन्हें प्रश्रय न दें, यह संघ की एक सेवा हो सकती है।

आचार्यप्रवर संघ के लिए दिन-रात जो पुरुषार्थ कर रहे हैं, वह सबके सामने है। हमारा भी दायित्व है

कि हम भी अपना कुछ योगदान दें। यों तो हम संघ के उपकार से कभी उऋण नहीं हो सकते, किन्तु संघ प्रभावना के लिए यथाशक्ति कुछ कार्य कर हम अपने मन में संतोष कर सकते हैं कि हम संघ के लिए कुछ कर रहे हैं। हमारा नन्दनवन-सा तेरापंथ धर्मसंघ आचार्यश्री महाश्रमणजी के कुशल नेतृत्व में उत्तरोत्तर प्रवर्धमान है और भविष्य में भी बना रहे। मंगलकामना।'

इस अवसर पर परम पूज्य आचार्यप्रवर द्वारा प्रदत्त 'धर्मसंघ के नाम संदेश' पूर्व विज्ञप्ति में प्रकाशित है। कार्यक्रम के दौरान साधु-साध्वियों और समणश्रेणी ने मंच के सम्मुख कतारबद्ध खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया। मर्यादा महोत्सव के अवसर पर कटक में साधु-साध्वियों व समणश्रेणी की उपस्थिति इस प्रकार रही-- साधु-३८, साध्वियां ७२--कुल ११०। समण-१, समणियां-६५--कुल ६६।

समणी पुण्यप्रज्ञाजी ने अपने समणी पर्याय के पच्चीस वर्षों की सम्पन्नता के संदर्भ में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। संघगान के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। मर्यादा महोत्सव के त्रिदिवसीय कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। इस आयोजन में संभागी बनने हेतु देश-विदेश से हजारों श्रद्धालु कटक पहुंचे। अमृतवाणी द्वारा आज के कार्यक्रम का सीधा प्रसारण पारस चैनल पर किया गया, जिससे दूर बैठे हजारों श्रद्धालु भी लाभान्वित हुए। त्रिदिवसीय आयोजन में कटक के अन्य जैन एवं जैनेतर लोगों की भी अच्छी सहभागिता रही। कार्यक्रमों की गरिमा, सुव्यवस्था और उपस्थिति कटक शहर के जैन-जैनेतर समाज में श्लाघा का विषय बनी हुई थी।

परम पूज्य आचार्यप्रवर १५४वें मर्यादा महोत्सव परिसम्पन्न कटक से पश्चिम ओड़िशा की ओर प्रस्थित हो गए हैं। स्थानाभाव के कारण पूज्यप्रवर के विहार आदि की रिपोर्ट इस अंक में प्रकाशित नहीं हो पाई है। उसे पढें आगामी विज्ञप्ति में।

नवीन घोषित चतुर्मास

१. मुनिश्री मुनि सुव्रतकुमारजी	के.जी.एफ.	२. मुनिश्री कमलकुमारजी	कांदिवली, मुम्बई
३. मुनिश्री विजयकुमारजी	संगरूर	४. साध्वी उज्ज्वलप्रभाजी	रतलाम
५. साध्वी ललितप्रभाजी	उधना, सूरत	६. साध्वी शांताकुमारीजी	पुर
७. साध्वी स्वर्णरेखाजी सैंथिया		८. साध्वी निर्वाणश्रीजी	धुलिया
९. साध्वी पद्मावतीजी शहादा, खानदेश		१०. साध्वी रामकुमारीजी(सर.)	कांकरिया-मणिनगर

११. साध्वी अणिमाश्रीजी, साध्वी मंगलप्रज्ञाजी कालबादेवी, मुम्बई

माघ शुक्ला त्रयोदशी के सूर्योदय से पूर्व पूज्यप्रवर द्वारा संबोधन प्राप्त श्रावक-श्राविकाएं

शासनसेवी

१. श्री किशनलालजी डागलिया मुंबई

महादानी

१. श्री भरतजी जैन केसिंगा
२. श्रीमती ज्योति जैन केसिंगा

तपोनिष्ठ श्राविका

१. श्रीमती शारदाबाई पुगलिया	जलगांव	२. श्रीमती शान्ताबाई दूगड़	वानियंबाड़ी
३. श्रीमती उगमबाई चोरड़िया	बेंगलुरु	४. श्रीमती लीलाबाई सुखाणी	बीकानेर-मुंबई
५. श्रीमती पिस्ताबाई सकलेचा	बेंगलुरु	६. स्व. गिन्नीबाई कुण्डलिया	सरदारशहर

श्रद्धानिष्ठ श्रावक

१.	श्री धनराजजी भंसाली	असाढ़ा-अहमदाबाद	२.	श्री बाबूलालजी आच्छा	चेन्नई
३.	श्री शिवप्रसादजी जैन	सिंधीकेला	४.	श्री गणपतलाल कोठारी	रींछेड़-मुंबई
५.	श्री भीमराजजी नौलखा	विराटनगर	६.	श्री मोहनलालजी कोठारी	लाडनूं-विराटनगर
७.	श्री फूसराजजी नाहटा	कालू-कोयम्बत्तूर	८.	श्री किशनलालजी बोथरा	बीकानेर
९.	डॉ. मदनलालजी सोनी	राजसमंद	१०.	श्री सुमेरमलजी नाहटा	छापर-काठमांडू
११.	श्री खजांचीदासजी जैन	तोशाम	१२.	श्री मूलचन्दजी महनोत	उदासर
१३.	श्री शंकरलालजी मणोत	मुंबई	१४.	श्री भंवरलालजी जीरावला	समदड़ी-अहमदाबाद
१५.	श्री गम्भीरमलजी सोनी	रेलमगरा-मुंबई	१६.	श्री बालचन्दजी नाहटा	हैदराबाद
१७.	श्री महेन्द्रकुमारजी बोहरा	आमेट	१८.	श्री डालचन्दजी बोहरा	मीरा रोड़, मुंबई

श्रद्धा की प्रतिमूर्ति

१.	श्रीमती सुमित्राबाई बोहरा	कोयम्बत्तूर	२.	श्रीमती झमकुबाई छाजेड़	बेंगलुरु
३.	श्रीमती कमलाबाई दूधोड़िया	बेंगलुरु	४.	श्रीमती कमलाबाई आच्छा	चेन्नई
५.	श्रीमती कासीबाई कोठारी	पल्लावरम्, चेन्नई	६.	श्रीमती माणकबाई सिंघी	सुजानगढ़-हैदराबाद
७.	श्रीमती मूर्तिबाई जैन	केसिंगा	८.	श्रीमती विमलाबाई महनोत	हरिनगरा
९.	श्रीमती रायकंवरीबाई चिण्डालिया	सरदारशहर-राजलदेसर	१०.	श्रीमती रामकलीबाई जैन	सिंधीकेला
११.	श्रीमती रतनीबाई बोरदिया	देवरिया-डीसा	१२.	श्रीमती सोसरबाई मादरेचा	मुंबई
१३.	श्रीमती सुन्दरबाई बोल्या	खरनोटा	१४.	श्रीमती चंचलबाई धारीवाल	चेन्नई
१५.	श्रीमती चुकीबाई धारीवाल	चेन्नई	१६.	श्रीमती जमनीबाई पुगलिया	श्रीडूंगरगढ़-बेंगलोर
१७.	श्रीमती गुलाबबाई रायजादा	फतेहपुर-जयपुर	१८.	श्रीमती लक्ष्मीबाई बांठिया	अररिया आरएस
१९.	श्रीमती ललिताबाई चिंपड़	चेन्नई	२०.	श्रीमती भंवरीबाई बैद	राजलदेसर-कटक
२१.	श्रीमती पुष्पाबाई गुगलिया	अहमदाबाद	२२.	श्रीमती लूणीबाई बोथरा	गंगाशहर
२३.	श्रीमती सावित्रीबाई अरोरा	धुलिया	२४.	श्रीमती विमलाबाई नाहटा	छापर-मुंबई
२५.	श्रीमती राजूबाई पुगलिया	कोयम्बत्तूर	२६.	श्रीमती पिस्ताबाई छाजेड़	अहमदाबाद
२७.	श्रीमती सुन्दरबाई मादरेचा	केलवा	२८.	श्रीमती पुष्पाबाई कोठारी	रींछेड़-मुंबई
२९.	श्रीमती पानीबाई कोठारी	टॉडगढ़-मुंबई	३०.	श्रीमती शान्तिबाई बैद	भीनासर-रायपुर
३१.	श्रीमती लक्ष्मीबाई चोरड़िया	टमकोर-ग्वालियर	३२.	श्रीमती प्रभाबाई गांधी	सूरत
३३.	श्रीमती नारायणीबाई बोथरा	बीकानेर-सूरत	३४.	श्रीमती दरियावबाई पालगोता	टापरा-सूरत
३५.	श्रीमती मनोहरबाई पोरवाल	अहमदाबाद	३६.	श्रीमती किरणबाई चिंडालिया	सरदारशहर
३७.	श्रीमती गुलाबबाई बेताला	कटक	३८.	श्रीमती सूरजबाई रांका	गंगाशहर
३९.	श्रीमती पदमाबाई कातरेला	हैदराबाद	४०.	श्रीमती झिणकारबाई डागा	गुवाहाटी
४१.	श्रीमती जतनबाई नाहटा	बीदासर-हैदराबाद	४२.	श्रीमती हेमलताबाई इन्टोदिया	उदयपुर
४३.	श्रीमती झूमाबाई जैन	केसिंगा	४४.	श्रीमती चम्पाबाई पालगोता	टापरा
४५.	स्व. मनोहरीबाई सुराणा	सरदारशहर	४६.	श्रीमती मीठूबाई कोठारी	रींछेड़-मुंबई

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

४७. स्व. नाथीबाई कोठारी	बालोतरा	४८. श्रीमती रतनबाई सेठिया	सरदारशहर
४९. स्व. किस्तूरीबाई कोठारी	सरदारशहर-काठमांडू	५०. स्व. माणकबाई गोलछा	बीकानेर
५१. स्व. मोहनबाई मेड़तवाल	उदयपुर		

महादानी संबोधन

२८ जनवरी को परमपूज्य आचार्यप्रवर ने स्व. साध्वी रूपमालाजी को 'महादानी' संबोधन से संबोधित किया है।

साध्वी कमलरेखाजी (लाडनूं) कालधर्म को प्राप्त

३१ जनवरी को हिसार में प्रवासित साध्वी कमलरेखाजी (लाडनूं) कालधर्म को प्राप्त हो गई। उनके विषय में आचार्यप्रवर के उद्‌गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा को भेंट

५१०००/- विजयसिंह-गणपतिदेवी मनोज-ममता सुमति-रेखा अमन आयुष पारख श्रीडूंगरगढ़-सिलीगुड़ी।

५१०००/- स्व. अनोपचंद सेठिया (छोटीखाटू) की पुण्यस्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रद्धा की प्रतिमूर्ति प्रेमदेवी सुपुत्र व पुत्रवधू महेश-चंदा संजय-समता राजेश-सुनीता सुपौत्र व पौत्रवधू सौरभ-ज्योति मुदित सिद्धार्थ यश सेठिया परिवार कटक-भुवनेश्वर।

५१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति श्रीमती सुखीदेवी सेठिया (धर्मपत्नी स्व. पूनमचंद सेठिया सरदारशहर) एवं उनके सुपुत्र व पुत्रवधू जितेन्द्र-राज राजेंद्र-सुनीता सुपौत्र व पौत्रवधू राहुल-अमृता सुपौत्री रक्षिता आकांक्षा व इरा सेठिया।

५१००/- स्व. माणकचंद बरलोटा (रायपुर) की तृतीय पुण्यतिथि पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती तारादेवी, सुपुत्र व पुत्रवधू शांतिलाल कांतिलाल विनोद-सरिता प्रवीण-प्रमिला सुपौत्र लविश वरुण प्रणय प्रपौत्र विदित प्रपौत्री मानसी बरलोटा।

५१००/- तपोनिष्ठ श्राविका श्रीमती लक्ष्मीदेवी बैंगानी (धर्मपत्नी स्व. जसकरण बैंगानी बीदासर) बाबूलाल कमलकुमार राजकुमार अमरकुमार रुपेश बैंगानी।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapati@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला